ॐ

" कलौत केवला भक्तिः "

शब्द संग्रह

Shabd Sangrah

भगवद्भक्ति आश्रम, रामपुरा

(रेवाड़ी)

Registered (रजिस्टरी कीगई)

२००० प्रति] सं० १९८० [मूल्य प्रेम

गयादत शर्मा के प्रबन्ध से

गयादत प्रेस, बड़ा दरीबा देहली में छपा।

श्री राम नारायण वासुदेव,
गोविन्द वैकुण्ठ मुकुन्द कृष्ण ।
श्री केशवानन्त नृसिंह विष्णो,
मां त्राहि संसार भुजङ्ग दष्टम् ॥

हे श्री राम !, नारायण, वासुदेव, गोविन्द, वैकुण्ठ, मुकुन्द कृष्ण, श्री केशव, अनन्त, नृसिंह, विष्णु, संसार रूपी सांप करके काटे हुए मुझ को बचाओ ॥

गोविन्द केशव जनार्दन वासुदेव,
विश्वेश विश्व मधुसूदन विश्वरूप ।
श्रीपद्मनाभ पुरुषोत्तम देहि दास्यम्
नारायण ऽच्युत नृसिंह नमो नमस्ते ॥

हे गोविन्द, हे केशव, हे जनार्दन, हे वासुदेव, हे विश्व के स्वामी, हे विश्व, हे मधुसूदन, हे विश्व रूप, हे पद्मनाभ, हे पुरुषोत्तम ! मुझे दास भाव हो और हे अविनाशी हे नृसिंह तुझको बारंबार नमस्कार है।

अहिल्या पाषाणं प्रकृति पशुरासीत् कपिचमु
गुहो भूश्चान्डाल स्त्रिनयमपि नीतं निजपदम्
अहं चित्ते नाश्मा पशुरपि तवार्चाद्यकरणात्
क्रियाभिश्चाण्डाल रघुवर नमामोद्धरसिंकिम्

हे रघुवर ! अहिल्या पाषाण की थी और कपिचमु प्रकृतिसे पशु था और गुह जोकि निषादों का राजा था, वह चाण्डाल था उनको आपने अपना पद प्राप्त कराया। प्रभु ! मैं चित्त से तो पत्थर हूं और तुम्हारी पूजादि न करने से पशु भी हूं और क्रिया रहित होने से चाण्डाल हूं। हे रघुवर क्या मेरा उद्धार नहीं करोगे ?

वपुः प्रादुर्भावादनुमितमिदं जन्मनि पुरा,
पुरारे न प्रायः क्वचिदपि भवन्तं प्रणतवान्
नमन्मुक्तः सं प्रत्यहमतनुरग्रेऽप्यनति भाङ्
महेश क्षन्तव्यं तदिदमपराधद्वयमपि ॥

हे त्रिपुरारि! शरीर के प्रादुर्भाव (उत्पत्ति) से ऐसा अनुमान होता है कि पूर्व जन्म में बहुत करके मैंने तुम्हें प्रणाम नहीं किया और अब प्रणाम करने से मुक्त हो जाऊंगा, इससे शरीर नहीं रहेगा, इसलिए अब फिर भी तुम्हें प्रणाम नहीं करूंगा। इसलिए हे महेश्वर! आप मेरे दोनों अपराधों को क्षमा करना ॥

नमोनमः कारणवामनाय,
नारायणा यामित विक्रमाय ।
श्री शार्ङ्ग चक्रासि गदाधराय,
नमोऽस्तु तस्मै पुरुषोत्तमाय ॥

कारण रूपी वामन सूक्ष्म के अर्थ नमस्कार है; नारायण अतुल प्राक्रम वाले श्री शारङ्ग धनुष, चक्र, गदा धारण करने वाले तिस पुरुषोत्तम देव के अर्थ नमस्कार है।

गुह्याय वेद निलयाय महोदराय,
सिंहाय दैत्य निधनाय चतुर्भुजाय।
ब्रह्मेन्द्र रुद्र मुनि चारण संस्तुताय,
देवोत्तमाय वरदाय नमोऽच्युताय ॥

गुह्य स्वरूप वेद के स्थान महान उदर वाले सिंह स्वरूप दैत्यों को नष्ट करने वाले चतुर्भुज स्वरूप वाले ब्रह्मा, इन्द्र, शिव, मुनि; चारण इन्हों करके संस्तुत, देवताओं में उत्तम वरदायी, अच्युत अर्थात् जिसका अपने स्थान से पड़ना नहीं है ऐसे देव के अर्थ नमस्कार है।

श्रीकृष्ण रुक्मिणीकान्त गोपीजन्मनोहर
संसार सागरे मग्नं मा मुद्धर जगद्गुरो ॥

ॐ

शब्द भजन नं० १

दीना नाथ दया निध स्वामी कौन भांति मैं तुम्हें रिझाऊं। टेक
श्री गङ्गा चरणों से निकसी सूचो नीर कहां से प्रभु लाऊं।
काम धेनु कल्पवृक्ष तुम्हारे, कौन सो पदारथ भोग लगाऊं ॥१॥
चार वेद तुम मुख से भाषे, और कहा प्रभु पाठ सुनाऊं।
अनहद बाजे बजत तुम्हारे, ताल मृदङ्ग क्या शङ्ख बजाऊं ॥२॥
कोटि भानु थारे नख की शोभा, दीपक ले प्रभु कहा दिखाऊ।
लक्ष्मी थारी चरणन की चेरी, कौन द्रव्य प्रभु भेट चढ़ाऊं ॥३॥
तुम तिरलोकी के कर्ता हर्ता, तुम्हें छोड़ प्रभु कौन पै जाऊं।
सूर श्याम प्रभु विपत-विडारण, मन वाञ्छित फल प्रभु तुमही
से पाऊं ॥४॥

भजन नं० २

हमारे प्रभु एक तुम्ही ओङ्कार ॥
मात पिता गुरु बन्धु सहोदर, धन विद्या परिवार
मन बल बुद्धि प्राण तुम ही हा, नयनन में उजियार ॥ १ ॥

हरि होकर हरे रंग में दीसो पत्र पुष्प फल डार
धरणी आकाश शशि और तारे बिजली में चमकार ॥ २ ॥
ऊपर नीचे पर्वत सागर सब तुम अपरंपार
तुम ही सूरज में हो गरजो बरसो अमृत धार ॥ ३ ॥
एक धुनी हो तुम से सब की तुमरा वार न पार
सुन्दर शक्ति विकाश शुद्धता हमको दे दातार ॥ ४ ॥
काम क्रोध मद लोभ निवारो परमानन्द दो प्यार

भजन नं० ३

मन परदेशी हो ये नहीं अपना देश ॥ टेक ॥
सत का कहना सत में रहना आनन्द रूप किसी का भय ना
जो कोई कहे सभी की सहना येही रटन हमेश ॥ १ ॥
गुरु का वचन सत्य कर मानो जगत् जाल झूठ कर जानो
तत्वमसि का रूप पिछानो कट जाय कर्म कलेश ॥ २ ॥
जो दीखे सो रूप हमारा कोई नहीं है हम से न्यारा
मित्र और शत्रु कोई न हमारा मिट गये राग और द्वेष ॥ ३ ॥
शाह गुरु शुकदेव विराजे चरणदास चरणों में साजे
गुरु के वचन कभी नहीं त्यागे यही सत्य उपदेश ॥ ४ ॥

भजन नं० ४

भजन बिन बावरे तैने हीरासा जन्म गवांया । ॥ टेक ॥
कभी न आया सन्त शरण में ना तैं हर गुण गाया
बह २ मरा बैल की न्याईं सोय रहा उठ खाया ॥ १ ॥
ये संसार हाठ बनिये की सब जग सौदा आया
चातुर माल चौगुणा कीना मूरख मूल ठगाया ॥ २ ॥
ये संसार फूल संभल का शोभा देख लुभाया
मारी चोंच रूई निकस्याई मूंडी धुन पछताया ॥ ३ ॥
ये संसार माया का लोभी ममता महल चिनाया
कहत कबीर सुनो भाई साधो हाथ कछू ना आया ॥ ४ ॥

भजन नं० ५

जिन्हों ने मन मार लिया मैं तो उन सन्तों काहू दास ॥ टेक ॥
आपा मार जगत् में बैठे नहीं किसी से काम
उन में तो कुछ अन्तर नाहीं सन्त कहो चाहे राम ॥ १ ॥
मन मारा तन वश किया सभी भरम भये दूर
बाहिर तो कुछ सूझे नाहीं अन्दर झलके नूर ॥ २ ॥

प्याला पी लिया नाम का जी छोडा जगत का मोह
हमको सद्गुरु ऐसे मिल गये सहज मुक्त गई होय ॥ ३ ॥
नरसी जी के सत् गुरू स्वामी दिया अमी रस प्याय
एक बूंद सागर में मिल गई कहा करे यमराय ॥ ४ ॥

भजन नं० ६

जो कोई चित्त से मोहे ना बिसारे
मैना बिसारूं प्रण है यही मेरा ॥ टेक ॥
धर्म प्रिय हो धर्म बढ़ाऊं सफल कार्य कर अर्थ बताऊं
मुक्ति चाहे तो पार लगाऊं पल क्षण माहिं न लागत देरा ॥१॥
रोग हरूं चिन्ता सब टारूं अभय करूं शत्रु को मारूं
अचल भक्तजन बेग उबारूं सेवा करूं आप बन चेरा ॥ २ ॥
मेरा नाम भक्त सुखदायक सदा बिपत में होत सहायक
जो कोई रटे कृष्ण यदु नायक ताके हृदय करत नित डेरा ॥३॥

भजन नं० ७

जुगलिया चाम की जामें बोले रमताराम ॥टेक॥
चाम ही का ऊंटड़ा चाम का नगारा
चाम ऊपर चाम बैठा चाम बजावन हारा ॥ १ ॥

चाम ही की गावड़ी चाम ही का बच्छा
चाम ऊपर चाम नीचे चाम दुहावन हारा ॥ २ ॥
चाम ही की धर्तली चाम का आकाशा
चाम ही के नौ लख तारे जिन में है परकाशा ॥ ३ ॥
कहै रहदास सुनो भाई साधो कौन चाम से न्यारा
जो इस चाम से न्यारा कहिये सोही गुरू हमारा ॥ ४ ॥

भजन नं० ८

कर महलों में दर्श महल में प्यारा है ॥ टेक ॥
मूल कमल दल चित्र बखानो कलङ्क जाप लाल रंग मानो
देव गणेश तहां रूपा ठाणो ऋद्धि सिद्धि चवँर ढुलारा है ॥ १ ॥
स्वाद चक्र षट दल विस्तारो ब्रह्मा सावित्री रूप निहारो
उलट नागिनी का शिर मारो, तहां शब्द ओङ्कारा हैं ॥ २ ॥
नाभि, अष्टकमल दल राजा, स्वेत सिंहासन विष्णु विराजा
हिरङ्ग जाप तासू मुख गाजा लक्ष्मी शिव आधारा है ॥ ३ ॥
द्वादश कमल हृदय के मांहीं जनक गुरु शिव ध्यान लगाहीं
सोई शब्द तहां धुनि जाई गण करें जय २ कारा है ॥ ४ ॥

दो दल कमल कण्ठ के माहीं तेही मध्य बसे अविद्या माई।
हरिहर ब्रह्मा चवंर ढुलाई जहां शब्द नाम उचारा है ॥ ५ ॥
ता पर कंज कमल है भाई इक भौंरा दो रूप दिखाई
निज मन करी जहां ठकुराई सो नयनन पिछवारा है ॥ ६ ॥
समलन भेद क्रिया निरवारा यह रचना सब पिण्ड मझारा
सत्संगत् कर गुरु शिर धारा वहां सत्य नाम उचारा है ॥ ७ ॥

भजन नं० ९

दलाली लालन की म्हारे सद्गुरू दई है बताय ॥ टेक ॥
लाल पड़ा मैदान में कीच रहा लिपटाय।
निगुरे २ लख गये सुगरे लिया उठाय ॥ १ ॥
सब के पल्ले लाल है सब ही साहूकार।
गांठ खोल परखा नहीं इस विध आगई हार ॥ २ ॥
इधर से अन्धा आवता उधर से अन्धा जाय।
अन्धे से अन्धा मिला रस्ता कौन बताय ॥ ३ ॥
लाली २ सभी कहें लाली लखै न कोय।
लाली लखी कबीर ने मुक्ति पाई सोय ॥ ४ ॥

भजन नं० १०

तुम्हारे बिना बिगरी कौन सुधारे ॥ टेक ॥
जी इक दिन बिगड़ी पिता पुत्र में बांध खंभ से मारे ।
जन अपने के काज दयानिधि रूप नर हरि धारे ॥ १ ॥
जी इक दिन बिगरी भ्रात २ में लात दशानन मारे ।
राज पाय बिभीषण फतह के बाजत लंक नगारे ॥ २ ॥
जी इक दिन बिगरी राजसभा में द्रोपद दीन पुकारे ॥ ३ ॥
ताको अनन्त चीर बढ़ाय दुष्ट दुशासन हारे ।
इक दिन बिगरी जन नरसी की समधीजू के द्वारे ।
सब भांति भात भर कारज जन के सारे ॥ ४ ॥
जब २ भीर परी भक्तन पर तब २ कारज सारे ।
अब की बार कहां पर सोये बिपत विडारण हारे ॥ ५ ॥

शब्द भजन नं० ११

माया हो रंग बादली जामें चन्दा दर्शे नाय ॥ टेक ॥
काया में माया बसे ज्यों पत्थर में आग ।
जो तेरी इच्छा हरि मिलन की चकमक होकर लाग ॥ १ ॥

घोर चुराई तूमरी रे जल में डूबे नाय।
वो डूबे वो ऊभरे जी करनी छानी नाय ॥ २ ॥
काम क्रोध के बने बदरुवा गर्ज रहा अहङ्कार।
आशा तृष्णा खिवें बीजली भीज रहा संसार ॥ ३ ॥
ज्ञान पवन जब से चली सब बादल दिये उडाय।
कहत कबीर सुनो भाई साधो चन्दा दर्शे आय ॥ ४ ॥

भजन नं० १२

रङ्ग महल के बीच पुरुष मतवाला है ॥ टेक ॥
उतरे प्राण मर्भ में डारे,
अलख पुरुष का खेल भरम से न्यारा है ॥ १ ॥
गगन मण्डल में अमी रस भरियां,
नुगरा प्यासा जाय हिये अन्धियारा है ॥ २ ॥
पांचों आत्मा अपनी मारो, नागन का फन उलटा मारो,
मेरू दण्ड को शोध, पवन दुधारा है ॥ ३ ॥

भजन नं० १३

वा घर जाइयो हे नीन्द जा घर राम नाम ना भावे
बैठ सभा में मिथ्या बोले निन्दा करे पराई।

वो घर हमने तुझे बताया जाइयो बिना बुलाई ॥ १ ॥
क्या तू जाइयो राज द्वारे या रसिया रस भोगी ।
हमारा पीछा छोड बावरी हम हैं रमते जोगी ॥ २ ॥
ऊंचा मन्दिर धौर सखी री जहां कामिनि चवँर ढुलावें ।
हमरे संग क्या लेगी बावरी पत्थर पर दुःख पावे ॥ ३ ॥
कहै भर्थरी सुन री निन्दरा यहां नहीं तेरा वासा ।
हम तो रहते राम भरोसे गुरु मिलन की आशा ॥ ४ ॥

भजन नं० १४

बंगला भला बना दर्वेश जामें नारायण परवेश ॥ टेर ॥
पांच तत्व की ईंट बनाई तीन गुणों की गारा ।
छत्तीसों की छात बना कर चिन गया चिनने हारा ॥ १ ॥
इस बंगले के दश दरवाजे बीच पवन का थंभा ।
आवत जावत कोई न जाने देखो बड़ा अचम्भा ॥ २ ॥
इस बंगले में चौपड़ मांडी खेले पांच पचीस ।
कोई तो बाजी हार चला है कोई चला जुग जीत ॥ ३ ॥
इस बंगले में पातर नाचे मनुवा ताल लगावे ।
सुरत निरत के पहर घूंघरू राग छत्तीसों गावे ॥ ४ ॥

कहै मछन्दर सुन बाले गोरख जिन यह बंगला गाया।
इस बंगले के गाने वाला बहुर जन्म नहीं आया ॥ ५ ॥

भजन नं० १५

जगदीश्वर तुम्हारा सहारा हमें।
यहां दीखे न कोई हमारा हमें ॥ टेक ॥

गर्भ यातना के संकट से,
कर किरपा जो उवारा हमें ॥ १ ॥
दांत नहीं थे जब दूध दिया तब,
फिर भी कभी न विसारा हमें ॥ २ ॥
सदा रह्यो साथी घट भीतर,
पल भर भी करत न न्यारा हमें ॥ ३ ॥
जो कुछ सुख तुम देओ दया कर,
क्या कोई देगा बिचारा हमें ॥ ४ ॥
धर्मदास कहैं भव वारिधिसे,
पार कबीर उतारा हमें ॥ ५ ॥

शब्द भजन नं० १६

जन्म तेरो बातां में बीत गयो, तैंने कबहु न नाम कह्यो ॥टेक॥

पांच वर्ष का आला भोला, अब तो बीस भयो।
मकर पचीसी माया कारण, देश विदेश गयो ॥ १ ॥
तीस वर्ष अब मति उपजी, लोभ बढ़े नित नयो।
माया जोड़ी लाख किरोड़ी अजहू न तृप्त भयो ॥ २ ॥
बृद्ध भया जब आलस उपजा जप तप कंठ रह्यो।
साधु की संगत कबहु न कीनी विरथा ही जन्म गयो ॥३॥
यह संसार मतलब का लोभी झूठा ठाठ रच्यो।
कहत कबीर समझ मन मूर्ख तू क्यों भूल गयो ॥ ४ ॥

शब्द नं० १७

बांस चढ़ी हर्षानी नटनियां ॥ टेक ॥
शब्द बांस धुनि डोर पकड़ कर,
गगन में चढ़ी मगनानी नटनियां ॥ १ ॥
अनहद बाजे ऊपर बाजें,
चढ़ गई अधर ठिकानी नटनियां ॥ १ ॥
सत्यलोक में डंका जाय दीना,
गुरु को करत सलामी नटनियां ॥ ३ ॥
पद्मदास फिर उलटी होकर,
चरण गुरु के लिपटानी नटनियां ॥ ४ ॥

भजन नं० १८

साधो राम करे सोइ होय रे ॥ टेक ॥

पुरवा पछवा पवन चलत है, असुर रह्यो है सोय रे ॥ १ ॥
तोरो या गढ़ को भीतर आवो, बंधी धरी हैं दोय रे ॥ २ ॥
सब जग अपने धन्धे में लाग्यो, तुम्हें न देखे कोय रे ॥ ३ ॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो, लखे निरन्तर जोय रे ॥ ४ ॥

ग़ज़ल भजन नं० १९

इतना तो करना स्वामी जब जान तन से निकले ।
गोविन्द नाम कह कर मेरे प्राण तन से निकलें ॥टेक॥
श्री गंगा जी का तट हो या यमुना जी वट् हो ।
और सांवरा निकट हो फिर प्राण तन से निकलें ॥
श्री वृन्दावन का थल हो, मेरे मुख में तुलसीदल हो ।
विष्णु चरण का जल हो फिर प्राण तन से निकलें ॥
सन्मुख सांवरा खड़ा हो वंशी का सुर भरा हो ।
तिरछा चरण धरा हो फिर प्राण तन से निकलें ॥
शिर सोहना मुकुट हो मुखड़े पर काली लट हो ।
यही ध्यान मेरे घट हो, फिर प्राण तन से निकलें ॥

उस वक्त जल्दी आना ना क़ौल भूल जाना ।
नूपुर की धुन सुनाना फिर प्राण तन से निकलें ॥
मेरे प्राण निकलें सुख से, तेरा नाम निकले मुख से ।
बच जाऊं घोर दुख से जब प्राण तन से निकलें ॥
जब कंठ प्राण आवे कोई रोग ना सतावे ।
तू दर्श यदि दिखावे फिर प्राण तन से निकलें ॥
यह नेक सी अरज़ है मानो तो क्या हरज है
कुछ तेरा भी फ़रज़ है, फिर प्राण तन से निकलें ॥

शब्द नं० २०

महरम हो सोइ जाने भाइ साधो ऐसा देश हमारा है रे ॥टेक॥
बिन बादल बिजली वहां चमके, बिन सूरज उजियारा है रे ॥
बिना नयन वहां मोती पुरोवे, बिन स्वर शब्द उचारा है रे ॥१॥
भँवर गुफा में अनहद बाजे, मुरली बीन सितारा है रे ॥
निर्मल बूंद मिली दरिया में, नहीं मीठा नहीं खारा है रे ॥२॥
जात वरण वहां सूझत नाहीं, ना वहां वेद विचारा है रे ॥
वहां जाय ब्रह्म बन बैठे, कहन सुनन से न्यारा है रे ॥३॥
कहत कबीर सुनो भाइ साधो, पहुंचेगा पहुंचन हारा है रे ॥
इस पद जो समझत बूझत अलख लखे सोइ प्यारा है रे ॥४॥

भजन नं० २१

धरम मत हारो रे, ज़ग में ज़िन्दगी दिन चार ॥टेक॥
अगम लोक से चल कर आया, पल्ले ख़र्ची कुछ नहीं लाया।
यहां आके गढ़ कोट चुनाया, यूं ही जाता संसार ॥ १ ॥
धरमराज के जाना होगा, सारा हाल सुनाना होगा।
फिर पाछे पछताना होगा, करलो ना सोच विचार ॥ २ ॥
अब तो चेत करो मेरे भाई तैंने वृथा उमर गंवाई।
तैं धोखे काया लुटवाई, भज राम नाम है सार ॥ ३ ॥
बार २ सत्गुर समझावे, मनुषा जनम बहुर नहीं पावे।
गया वक्त फिर हाथ न आवे, श्री स्वामीजी कहें हर बार ॥४॥

भजन नं० २२

कहो जी कैसे तारोगे, मेरो अवगुण भरो है शरीर ॥ टेक ॥
अंका तारे वंका तारे, तारे सदन कसाई।
सुआ पढ़ावत गणिका तारी, तारी है मीरां बाई ॥ १ ॥
धन्ना भक्त को खेत जमायो, नामे छान छवाई।
सैन भक्त को सांसो मेट्यो, आप बने हर नाई ॥ २ ॥

ध्रुव तारे प्रह्लाद उभारे, और गजराज उधारे।
नरसी जी के भात भरन को, रूप सांवरो सो धारे ॥ ३ ॥
काशी के हम वासी कहिये, मेरा नाम कबीरा।
करनी करके पार उतर गये, जाति वरण कुल हीना ॥ ४ ॥

शब्द नं० २३

सन्तों के आगे कौन चीज़ बादशाही ? ॥ टेक ॥
बादशाह ने दुलहा बन के, दश छोड़ी दश ब्याही।
तन पै ख़ाक सन्त दुलहे ने, लाई तो ओड़ निबाहा ॥ १ ॥
बादशाह घर नौबत बाजें, पातर फिरें उमाही।
अनहद बाजे बजें सन्त के, सुन सुन मस्त इलाही ॥ २ ॥
बादशाह की भरे न तृष्णा, कर दिये मुल्क तबाही।
सन्तों के सन्तोष ख़ज़ाना, हर दम अटल अथाई ॥ ३ ॥
बादशाह चितवे मन चाही, साध सन्त हर चाही।
शम्भुदास मता सन्तन का, चन्दा में दोष न स्याही ॥ ४ ॥

आरती नं० २४

हरि नारायण हरि नारायण नारायण हरि ओं ओ३म्
भवदुख हारण सब सुख कारण पतित उधारण प्रभु ओं ओ३म्

शुद्ध सच्चिदानन्द स्वरूपा अगम अरूपा शिव ओं ओ३म् ॥
निगम निरूपा सुर नर भूपा ज्योति स्वरूपा प्रभु ओं ओ३म् ॥
अनन्त अपारा पार ना वारा निरधारा हरि ओं ओ३म् ॥
ब्रह्म विकाश स्वयं प्रकाश जगन्निवास स्वामी ओं ओ३म् ॥
राम गोविन्द परमानन्द कृष्ण मुकुन्द गुरु ओं ओ३म् ॥

ध्वनि प्रेमानन्द २५

जय जय राधेकृष्ण, राधेकृष्ण, राधेगोविन्द ॥ टेक ॥
केशोजी कल्याण, गिरधरण छबीले लाल ।
मदनमोहन श्री वृन्दावन चन्द ॥ १ ॥
देवकी को छुट्या, बलभद्र जी को भय्या लाल ।
जाको मुख देखे से कटत जम फन्द ॥२॥
चत्रभुज चक्रपाणि देवकी आनन्द देव ।
नन्द को आनन्द प्रभु असुर निकन्द ॥३॥
ब्रजपति ब्रजराज, सुरन के किये काज ।
मुरली धरैं नयना देखे सो आनन्द ॥४॥
जादोपति जादोराय, सन्तन सदा सहाय ।
हरि यश गावे स्वामी परमानन्द ॥५॥

❀ कथा ❀

रहता था एक नगर में, कोई सेठ धनवान।
संसारिक व्यवहार में, था अति चतुर सुजान॥
सांसारिक व्यवहारिक कामों में, बुद्धि थी अत्यन्त प्रबल।
था धन उसके घर में इतना, जितना अथाह सागर में जल॥
सुत धन दारादिक सारी, सामग्री में था वह सेठ कुशल।
तो भी अशान्ति थी चित में, वानर की तरह था मन चंचल॥
ऐसा था वह सेठ, मोह में फँसा हुआ पर।
पूर्व पुन्य बल से, प्रकाशमय था उसका घर॥
सुत दारा तो, दोनों थे उसके अज्ञानी।
किन्तु सुत वधु थी, पतीव्रता सती सयानी॥
एक पुत्र बधु उसके घर में, विदुषी थी और सब गुण खानी।
आत्मा में अपने स्थित थी, और योगिनी भी थी और थी ज्ञानी॥
वह विविध प्रकार युक्तियों से, दृष्टान्त सुनाया करती थी।
कल्याणकारिणी वाणी में, सब को समझाया करती थी॥
निज पति पे और निज सास पर, उसने प्रभाव अपना डाला।
पर नहीं श्वसुर के हृदय में, कुछ हुआ ज्ञान का उजियाला॥

वह मायारूपी मदिरा को, पीकर उनमत्त रहा करता।
घर को धन को ही देख देख कर, हरदम मस्त रहा करता॥
जिसने मनरूपी दर्पण में, लक्ष्मी का बिम्ब उतारा हो।
ऐसे अज्ञानी प्राणी का, उपदेश से निस्तारा हो॥
एक दिवस की बात है सुनिये चित्त लगाय।
पुत्र वधु निज भवन में भोजन रही बनाय॥
छत्तीस प्रकार के व्यञ्जन थे उसकी रसोई में धरे हुवे।
और शुद्ध स्वच्छ सब पात्रों में सारे भोजन थे भरे हुवे॥
वह शीलवती सुन्दर नारी श्रद्धा से भोजन बना रही।
और थाल थालियों में उत्तम व्यञ्जन रख कर सजा रही॥
उस समय सेठ के मन्दिर में, आये एक बाल ब्रह्मचारी।
और क्षुधा निवृति के कारण, आकर बोले जय कृष्ण हरी॥
यह शब्द सुना जब नारी ने, तब दृष्टि साधु पर डाली।
उसकी नूरानी सूरत पर, देखी एक तेजमय लाली॥
उस योगी राज के चेहरे पर, कुछ अजब प्रकाश झलकता था।
उसका सुर्खीमायल चेहरा, सूरज की तरह दमकता था॥
वह देवी भी थी बड़ी चतुर, उस साधु को पहचान गई।
यह महात्मा कोई ज्ञानी है, बस इतना मन में जान गई॥

जौहरी के सन्मुख आकर के, नहीं लाल छिपाये छिपता है।
परखनेवाले के हाथोंमें आकरके, फिर धनका मोल निखरता है॥

योगीराज को प्रथम तो, झुक कर किया प्रणाम।
पुनः इसतरह पर लगी कहने सुन्दर नाम॥
अहो किस लिये की कृपा हम पर हे मुनिराज।
और फिर इतने जल्दी कैसे पहुंचे आज॥

नीची नजरों से मुसकरा कर यों मुनिराज ने फरमाया।
भोजन की इच्छा से माता यह देह यहां चलकर आया॥
और शीघ्र यहां आने का हम तुमको क्या कारण बतलावें।
इस काल की अद्भुत गति देखी देवता न इसको थाह पावें॥
सारा संसार असार है यह क्षण में कुछ है क्षण में कुछ है।
एक बाज़ीगर का खेल सा है क्षण में कुछ है क्षण में कुछ है॥
इसलिए जगत में हे माता एक पल का नहीं भरोसा है।
जो कुछ करना है आज ही कर यह कौन कहे कल को क्या है॥

योगीराज की वार्ता सुन कर अति गम्भीर।
शुद्ध स्वरूप नारि के बहा नयन से नीर॥

वह उन साधू से फिर यों कहनेलगी यह आप सत्य फरमाते हैं
ऋषिराज किन्तु इस घर में तो सब बासी भोजन खाते हैं॥

और यही फिक्र नित रहती है देखिये यह कब खायँगे।
ये जमा किये कल के टुकड़े कबतलक काम में आवेंगे॥
सुन कर नारी के वचन ऋषि हुए बेताब (व्यग्र)॥
प्रत्युत्तर में इसतरह कहने लगे शिताब (जल्दी)।
हे माता तेरी उमर है क्या और पति तेरा कै साल का है ?
और सास श्वसुर की भी बतलादे तू आयु क्या है ?
तेरी बातों के सुनने से मेरे मन को अति कष्ट हुआ।
अब भोजन नहीं करूंगा मैं बातों से ही सन्तुष्ट हुआ॥

मृगनयनी इस वचन पर यों बोली तत्काल।
मुनिराज मेरी उमर है अब बारह साल॥

है पति के मेरे सात साल और सास को चौथा साल लगा।
पर नहीं ऋषि जी इस जगमें अभी श्वसुर का मेरे जन्म हुआ॥
यह सुनते ही नारी के वचन चलदिये ब्रह्मचारी फौरन।
वह देवी भी फिर उसी तरह भोजन के कार्य में हुई मगन॥

श्रोतागण अब कीजिये श्रवण बाद का हाल।
सेठ भी घर पर आगये गले डुपट्टा डाल॥
द्वार के बाहर रोककर अपनी नितकी चाल।
उन्हों ने कानों से सुना अपने वह अहवाल॥

इन बातों के सुनते सुनते सीने में क्रोध उभर आया।
दोनों आंखों में लाला की फौरन ही खून उतर आया॥
विकराल हुई सूरत उनकी और लाल लाल दोनों आंखें।
जैसे शिकार पर होती है नाहर की अति कराल आंखें॥

पुत्र बधु से सेठ जी यों बोले तत्काल।
तेरी बातों से हुआ मुझ को बहुत मलाल॥

ऐ दुष्टा ऐ कुटिला नारी क्यों झूठ वृथा तूने बोला।
कब बासी भोजन किया बता अमृत में विष कैसे घोला?
जब मेरा जन्म ही नहीं हुआ तब तू यहां तक कैसे आई?
और चार साल की सास तेरी ओहो यह तेरी कुटिलाई॥
तू पुत्र से मेरे बडी हुई यह झूठ कहा किसलिये बता।
यह बज्र समान तेरी बातें सुन कर मेरा फट गया हिया॥
मैं सत्तर वर्ष का बैठा हूं जो तूने कहा पैदा न हुआ।
पचास साल की सास तेरी तू कहे है चौथा साल लगा॥
तू पति से अपने बडी हुई जो सात वर्ष का बतलाया।
और अपनी आयु बारह साल क्या नशा कोई तूने खाया॥

पुत्र बधु निज श्वसुर से यों बोली कर जोर।
पिता शान्त कर चित्त को देखो मेरी ओर॥

हे पिता जी मेरी बातों में गर झूठ का लेशमात्र भी हो।
तो खड्ग से मेरी जिह्वा को बल्के गर्दन को उडवादो॥
स्थान तलक उस साधु के हे पिता आप कृपा कीजे।
साधू से अर्थ इन बातों का सुन कर सन्देह मिटा लीजे॥

पुत्रबधु को सेठ जी लेकर अपने साथ।
योगीराज के सामने आय नवाया माथ॥

साधु भी अन्तरयामी थे सब समझ गये शंका मनकी।
ऐसे ही सच्चे यति सती शंका हरते हैं दुर्जन की।
जो नाहर को भी युक्ति से सीधे रस्ते पर ले आवें॥
जो दुर्जन को भी प्रीति से अपने सतमार्ग पर लावें॥
ऐसे महात्मा अगर मिलें तो भाग्य उदय हो जाता है।
इस पारस पथरी से मिल कर लोहा कञ्चन बन जाता है॥
वही ऋषि वोही मुनि वही हैं सच्चे साध (साधु)।
जो क्षण भर में भक्त के हरें कोटि अपराध॥

सेठ न करने पाये थे अपना कोई सवाल।
ऋषिराज देने लगे यों उत्तर तत्काल॥

सुनो सेठ जी चित्त को करके अपने शान्त।
मेरी और इस युवती की बातों का वृत्तान्त॥

इसने हम से यों पूछा था तुम इतनी जल्दी क्यों आये ?
था तात्पर्य इस बात का यह क्यों जल्दी कपड़े रंगवाये ?
यह सवाल इसने हम से किया है अभी तुम्हारा बालकपन ।
फिर ऐसी बाल अवस्था में साधु बनने का क्या कारण ?
तब इसको उत्तर हमने दिया है काल की अद्भुत गत माता ।
जो समय हाथ से निकल गया वह नहीं किसी सूरत आता ॥
इस लिये जगत में हे माता जो करना हो सो आज ही कर ।
क्या बाल अवस्था युवा जरा इन बातों पर कुछ ध्यान धर ॥
और इसने कहा इस घर में तो सब बासी टुकड़े खाते हैं ।
मतलब यह था सब पिछले शुभ कर्मों के फल पाते हैं ॥
सब पूर्व जन्म का दिया किया इस जन्म में प्राणी पाता है ।
जो आगे को नहीं करता है वह फिर पीछे पछताता है ॥
और इसने उमर बतलाई वह भी हम तुम्हें सुनाते हैं ।
जिसमें तुम को शङ्का आयी वह सब सन्देह मिटाते हैं ॥
यह बारह बर्ष से लगी हुई है नियम धर्म और आतम में ।
और चार साल से सास का मन है लगा हुआ परमातम में ॥
और सात वर्ष से ही इसके स्वामी को आतम ज्ञान हुआ ।
पर एक तूही सारे घर में ऐ मूरख शिला समान हुआ ॥

तेरा है ज्ञान से शून्य हृदय इस लिये नहीं जन्मा है तू।
जिस समय से जिसको ज्ञान हुआ उतनी ही है उसकी आयु ॥

सुन कर साधु के वचन हुआ सेठ को ज्ञान।
उत्तर में कहने लगे सुनिये कृपा निधान ॥

हे नाथ जिस तरह रोगी का सब रोग दवा से जाता है।
जिस तरह सूरज की किरणों से सब अन्धकार मिट जाता है ॥
जिस तरह से दीपक का प्रकाश घर को रोशन कर देता है।
जिस तरह भाग्य वाला कोई धन से घर को भर देता है ॥
इस तरह आपके वचनों से भगवन् मेरा कल्याण हुआ।
सब काम क्रोध मद लोभ छुटे और मुझको आतमज्ञान हुआ ॥
अब मैं इन सब विभूतियों को सच्चे मन से धिक्कारता हूं।
अब उदय अस्त के राज को भी घृणा से ठुकराता हूं ॥
अब मेरा बेड़ा पार हुआ भगवन्! इन चरणों को छूकर।
क्या खबर थी कैसी गति होती मैं बनता शूकर वा कूकर ॥
काषाय वस्त्र अब स्वामी जी मुझ को भी शीघ्र पहिना दीजे।
जो रंग है तुम पर चढ़ा हुआ मुझ पर भी वही चढ़ा दीजे ॥

योगिराज महाराज ने दिये वस्त्र काषाय।
रहे सेठ मुनिराज संग वन में अति हर्षाय ॥

नम्र निवेदन ।

मेरे प्यारे बन्धु वर्ग ! यदि आप स्वयं सुख और शान्ति चाहते हैं और संसार को सुखमय व शान्त बनाना चाहते हैं ; तो उस कल्याणकारिणी भक्ति का आचरण कर संसार में भक्ति फैलाने का प्रयत्न करो । जिस भक्ति में मग्न होकर ऋषि, मुनि नृत्य करते थे, जिस भक्ति के बल से भगवान राम और कृष्ण ने संसार को स्वर्ग बना दिया था उसका रस पान करने और कराने के लिये उन ऋषि, मुनि महात्माओं के बनाए गीत गाओ और उन गीतों को फैलाओ । मोक्ष में भक्ति से बढ़कर कोई साधन नहीं है और उपासना में गाने से बढ़ कर कोई तरीक़ा नहीं है । देश के नर, नारी और बालक यदि प्रेम में मग्न होकर भगवान के गीत गावेंगे तो भगवान अवश्यमेव मनवाञ्छित फल प्रदान करेंगे ।

भक्तों का दास—दलीप बनस्थी

श्री भगवद्भक्ति आश्रम,

रामपुरा पो० रेवाड़ी (दिल्ली)

❀ ओ३म् ❀

भगवद्भक्ति आश्रम,

रामपुरा ।

यह आश्रम रेवाड़ी जंकशन से पश्चिम दिशा में लगभग एक कोस के अन्तर पर जंगल में अति पवित्र भूमि में बना है। जल की सुविधा के लिये एक कूप है दूसरा तालाब "राम-सर" तीर्थरूप जो अभी खोदा जारहा है उसमें पक्के घाट बनाए जाने का आयोजन होरहा है तालाब के आस पास कई बीघों में उपयोगी वृक्ष लगे हैं लगभग ६०० बीघे भूमि आश्रम से लगी हुई गौओं के चरने के लिये श्री लेफ्टीनेण्ट राव बल-बीरसिंह जी ने आश्रम के लिये प्रदान की है। जिसमें गौ, मृग आदि स्वच्छन्द चरते हैं। इस वन में शिकार नहीं खेला जाता।

इस समय आश्रम में एक ब्रह्मचर्याश्रम, साधारण पाठशाला, कन्या पाठशाला, अछूत पाठशाला और अतिथियों व सत्सङ्गियों के ठहरने का स्थान व एक पुस्तकालय है।

उद्देश्य।

१-श्री भगवान की भक्ति का प्रचार करना।

२-गौ रक्षण और उसके लिये गोचर भूमि छुड़वाना।

३-जङ्गलों में वृक्ष लगवाना और बीच में जलाशय बनवाना।

४-शिक्षा का प्रचार करना (जिसमें मनुष्य मात्र विद्यालाभ कर सकें) और प्राचीन प्रथा का फिर प्रचलित करना।

५-बीमारियों के अवसर पर दवाई बांटना।

६-आस पास के ग्रामों में परस्पर के झगड़े और वैमनस्य मिटा कर शान्ति और प्रेम बढ़ाना।

७-सब संस्थाओं में भगवद्भक्ति और धर्म्म का भाव जाग्रत करना।

८-राजा और प्रजा सब ही का हितचिन्तन करना।

यह आश्रम नियमानुसार एक कमेटी की संरक्षता में है आश्रम से सत्यशब्द-संग्रह, सारसंग्रह, और भक्तियोग-संग्रह, महसूल डाक के टिकट भेजने पर मुफ्त भेजी जाती हैं।

नोट—आश्रम से "ज्ञानयोग भक्तिमार्ग" नाम का मासिकपत्र हिन्दी भाषा में प्रकाशित करने का विचार है यदि भक्तजन यत्न करके ५०० ग्राहकों के नाम भेज दें तो पत्र शीघ्र जारी कर दिया जावे।

पुस्तक मिलने का पता—

श्री भगवद्भक्ति आश्रम,

रामपुरा

पो० रेवाड़ी (दिल्ली)